International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

संगीता दास[1], डॉ . प्रमोद कुमार राजपूत[2]

[1]शोधार्थी (शिक्षा विभाग), श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
[2]एसोसिएट प्रोफेसर शिक्षा विभाग श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। अध्ययन की जनसंख्या में जिले के सभी पी.एम. श्री एवं शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित थे। नमूने के रूप में 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक नमूना तकनीक द्वारा किया गया। डेटा संग्रह हेतु संवेगात्मक बुद्धि मापन स्केल, सृजनात्मकता परीक्षण तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिए वार्षिक परीक्षा परिणाम के अंक का उपयोग किया गया। डेटा विश्लेषण हेतु Mean, Standard Deviation तथा t-test का उपयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक पाई गई, जबकि संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अध्ययन के आधार पर शैक्षिक निहितार्थ एवं आगे के शोध के सुझाव प्रस्तुत किए गए।

मुख्य शब्द: सृजनात्मकता, संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि, माध्य, सहसंबंध , टी टेस्ट

प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का प्रमुख साधन है। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों का बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक एवं सृजनात्मक विकास करना भी है। वर्तमान समय में शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन हो रहा है और नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विद्यार्थियों के समग्र विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

आज की शिक्षा प्रणाली में केवल शैक्षिक उपलब्धि को ही सफलता का मापदंड नहीं माना जाता, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि और सृजनात्मकता भी विद्यार्थियों की सफलता के महत्वपूर्ण घटक माने जाते हैं। संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने, सामाजिक संबंध बनाने, तनाव को नियंत्रित करने तथा जीवन में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। सृजनात्मकता विद्यार्थियों को नवीन विचार उत्पन्न करने, समस्या समाधान करने तथा नवाचार करने में सहायता करती है।

भारत सरकार द्वारा प्रारंभ की गई पी.एम. श्री विद्यालय योजना का उद्देश्य विद्यालयों को मॉडल स्कूल के रूप में विकसित करना है, जहाँ आधुनिक सुविधाएँ, स्मार्ट क्लास, डिजिटल शिक्षा, कौशल आधारित शिक्षा तथा समग्र

विकास पर ध्यान दिया जाता है। दूसरी ओर शासकीय विद्यालय पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत संचालित होते हैं, जहाँ संसाधनों की कमी, शिक्षण विधियों की पारंपरिकता आदि समस्याएँ देखी जाती हैं।
इसलिए यह अध्ययन महत्वपूर्ण है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि में क्या अंतर है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा को सर्वप्रथम मेयर और सैलोवे ने प्रस्तुत किया तथा बाद में गोलमैन ने इसे लोकप्रिय बनाया। उनके अनुसार संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
टोरेंस ने सृजनात्मकता पर कई अध्ययन किए और बताया कि सृजनात्मकता शिक्षण वातावरण, शिक्षण विधि तथा विद्यालय के वातावरण से प्रभावित होती है।
बैकर मेहदी ने भारतीय विद्यार्थियों के लिए सृजनात्मकता परीक्षण विकसित किया और पाया कि विद्यालय का वातावरण सृजनात्मकता को प्रभावित करता है।
शर्मा (2015) के अध्ययन में पाया गया कि संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध होता है।
गुप्ता (2018) ने सरकारी और निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि बेहतर सुविधाओं वाले विद्यालयों के विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि में बेहतर होते हैं।
उपरोक्त अध्ययनों से स्पष्ट है कि विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।
शोध अंतराल (Research Gap): पूर्व शोधों से स्पष्ट है कि संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पृथक-पृथक अध्ययन किए गए हैं, परंतु इन तीनों चरों का संयुक्त तुलनात्मक अध्ययन विशेषकर पीएम श्री एवं शासकीय विद्यालयों के संदर्भ में नहीं किया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य, विशेषकर रायपुर जिले में इस प्रकार के शोध का अभाव है, जो इस अध्ययन की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।
समस्या की उत्पत्ति (Origin of the Problem) : वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समग्र विकास पर बल दिया जा रहा है। पीएम श्री विद्यालयों के विकास एवं पारंपरिक शासकीय विद्यालयों के बीच अंतर को देखते हुए यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि क्या दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर है। इसी समस्या के समाधान हेतु यह अध्ययन किया गया।

समस्या कथन:(problem statement)

पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

संक्रियात्मक शब्दों की परिभाषा (Operational Definitions)

संवेगात्मक बुद्धि: विद्यार्थियों की अपनी भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने तथा दूसरों की भावनाओं को समझने की क्षमता।
सृजनात्मकता: विद्यार्थियों की नवीन, मौलिक एवं उपयोगी विचार उत्पन्न करने की क्षमता।
शैक्षिक उपलब्धि: विद्यार्थियों द्वारा वार्षिक परीक्षा में प्राप्त अंक।

अध्ययन के उद्देश्य

1. पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
2. पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।
3. पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

1. पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सीमाएँ (Limitations of the Study)

1. यह अध्ययन केवल जिले के चयनित PM SHRI School एवं शासकीय विद्यालयों तक सीमित है।
2. अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों (100 PM SHRI विद्यालय एवं 100 शासकीय विद्यालय) को ही शामिल किया गया है।
3. अध्ययन में केवल तीन चरों –
   - संवेगात्मक बुद्धि
   - सृजनात्मकता
   - शैक्षिक उपलब्धि

   का ही अध्ययन किया गया है।
4. अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि को केवल परीक्षा अंकों के आधार पर मापा गया है।
5. अध्ययन में प्रयुक्त परीक्षणों के प्रति विद्यार्थियों की रुचि, मनोदशा तथा परीक्षण परिस्थिति का प्रभाव परिणामों पर पड़ सकता है।
6. समय एवं संसाधनों की सीमाओं के कारण अध्ययन को सीमित विद्यालयों तक ही रखा गया।

प्रयुक्ति चर (Variables)

स्वतंत्र चर	आश्रित चर
विद्यालय का प्रकार	संवेगात्मक बुद्धि
	सृजनात्मकता
	शैक्षिक उपलब्धि

शोध विधि (Research Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि एवं तुलनात्मक शोध डिजाइन का उपयोग किया गया। अध्ययन की जनसंख्या रायपुर जिले के सभी पीएम श्री एवं शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को सम्मिलित करती है। नमूने के रूप में 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 100 पीएम श्री विद्यालय तथा 100 शासकीय विद्यालय के विद्यार्थी शामिल थे। नमूना चयन के लिए यादृच्छिक नमूना विधि का उपयोग किया गया।

विद्यालय	संख्या
PM SHRI	100
Govt School	100

प्रतिदर्श तकनीकी (Sampling Technique)

अध्ययन में नमूना चयन हेतु यादृच्छिक नमूना चयन विधि का उपयोग किया गया। आंकड़ों के संकलन के लिए संवेगात्मक बुद्धि मापनी, सृजनात्मकता परीक्षण तथा विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि अंकों का उपयोग किया गया। संकलित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा t-परीक्षण का उपयोग किया गया, जिससे दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अंतर की सार्थकता ज्ञात की जा सके।

आंकड़ों का विश्लेषण (Data Analysis)

परिकल्पना ओ का परीक्षण

1.पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 1: पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

समूह	N	Mean	SD	t-value
PM SHRI	100	65.20	8.50	2.45
Govt	100	60.10	7.80	

विश्लेषण एवं विवेचना (Analysis and Interpretation)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थियों का सृजनात्मकता का औसत (Mean = 65.20) शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के औसत (Mean = 60.10) से अधिक है। दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 8.50 एवं 7.80 है, जो यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के अंकों में सामान्य प्रसरण है।

दोनों समूहों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t-परीक्षण (t-test) का उपयोग किया गया। प्राप्त t-मूल्य 2.45 है। स्वतंत्रता की डिग्री (df = 198) पर 0.05 स्तर के लिए सारणी मान (Table value) 1.96 होता है।

चूंकि प्राप्त t-मूल्य (2.45) सारणी मान (1.96) से अधिक है, अतः यह अंतर 0.05 स्तर पर सार्थक है। इसलिए शून्य परिकल्पना "पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा" अस्वीकार की जाती है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पी.एम. श्री विद्यालय एवं शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया तथा पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक पाई गई।

2. पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 2: पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना।

समूह	N	Mean	SD	t-value
PM SHRI	100	110.5	10.2	1.50
Govt	100	108.2	9.8	

विश्लेषण एवं विवेचना (Analysis and Interpretation)

(Interpretation)

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि

पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि का औसत (Mean = 110.5) शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के औसत (Mean = 108.2) से थोड़ा अधिक है। दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 10.2 एवं 9.8 है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के अंकों का प्रसरण लगभग समान है।

दोनों समूहों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t-परीक्षण (t-test) का उपयोग किया गया। प्राप्त t-मूल्य 1.50 है। स्वतंत्रता की डिग्री (df = 198) पर 0.05 स्तर के लिए सारणी मान 1.96 होता है।

चूँकि प्राप्त t-मूल्य (1.50) सारणी मान (1.96) से कम है, इसलिए दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच पाया गया अंतर 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना "पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा" स्वीकार की जाती है।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि पी.एम. श्री विद्यालय एवं शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

3. पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

तालिका 3: पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

समूह	N	Mean	SD	t-value
PM SHRI	100	72.3	6.5	3.10
Govt	100	65.8	7.1	

विश्लेषण एवं विवेचना (Analysis and Interpretation)

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का औसत (Mean = 72.3) शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के औसत (Mean = 65.8) से अधिक है। दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 6.5 एवं 7.1 है, जिससे यह ज्ञात होता है कि दोनों समूहों के अंकों में सामान्य प्रसरण है।

दोनों समूहों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t-परीक्षण (t-test) का उपयोग किया गया। प्राप्त t-मूल्य 3.10 है। स्वतंत्रता की डिग्री (df = 198) पर 0.05 स्तर के लिए सारणी मान 1.96 तथा 0.01 स्तर के लिए सारणी मान 2.58 होता है।

चूँकि प्राप्त t-मूल्य (3.10) सारणी मान (2.58) से अधिक है, अतः दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच पाया गया अंतर 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसलिए शून्य परिकल्पना "पी.एम. श्री विद्यालय तथा शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा" अस्वीकार की जाती है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पी.एम. श्री विद्यालय एवं शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया तथा पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

निष्कर्ष (Conclusion)

1. पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता अधिक पाई गई।
2. संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. शैक्षिक उपलब्धि में पी.एम. श्री विद्यालय के विद्यार्थी बेहतर पाए गए।

परिणाम (Findings)

1. विद्यालय का वातावरण सृजनात्मकता को प्रभावित करता है।
2. संवेगात्मक बुद्धि पर विद्यालय प्रकार का अधिक प्रभाव नहीं पाया गया।
3. बेहतर संसाधनों वाले विद्यालयों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई।

शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications)

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा के विभिन्न पक्षों—विद्यालय, शिक्षक, पाठ्यक्रम एवं नीति निर्माण—के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण शैक्षिक निहितार्थ प्राप्त होते हैं:

1. शासकीय विद्यालयों में स्मार्ट क्लास की स्थापना

अध्ययन में यह पाया गया कि बेहतर संसाधनों एवं आधुनिक सुविधाओं से युक्त विद्यालयों के विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि एवं सृजनात्मकता में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। अतः शासकीय विद्यालयों में स्मार्ट क्लास, डिजिटल बोर्ड, ई-लर्निंग सामग्री एवं ICT आधारित शिक्षण को लागू किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी एवं आकर्षक बन सके।

2. सृजनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देना

सृजनात्मकता के विकास हेतु विद्यालयों में कला, संगीत, नाटक, लेखन, विज्ञान मॉडल, नवाचार परियोजनाएँ एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को नियमित रूप से आयोजित किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में मौलिक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता एवं नवाचार की प्रवृत्ति विकसित होगी।

3. संवेगात्मक बुद्धि विकास कार्यक्रमों का संचालन

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के समग्र विकास का महत्वपूर्ण घटक है। अतः विद्यालयों में जीवन कौशल शिक्षा (Life Skills Education), परामर्श (Counselling), योग, ध्यान (Meditation) तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (Social-Emotional Learning) कार्यक्रमों को शामिल किया जाना चाहिए।

4. प्रोजेक्ट आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण का क्रियान्वयन

प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण (Project-Based Learning) एवं अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) विद्यार्थियों को सक्रिय अधिगमकर्ता बनाते हैं। इससे उनकी सृजनात्मकता, सहयोगात्मक कार्य क्षमता तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित होती है। अतः शिक्षण प्रक्रिया में इन विधियों को शामिल किया जाना चाहिए।

5. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

शिक्षकों की भूमिका विद्यार्थियों के समग्र विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अतः शिक्षकों के लिए समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (In-service Training, Workshops, Seminars) आयोजित किए जाने चाहिए, जिनमें आधुनिक शिक्षण तकनीकों, ICT के उपयोग, संवेगात्मक बुद्धि विकास एवं सृजनात्मक शिक्षण विधियों पर विशेष ध्यान दिया जाए।

6. समग्र विकास उन्मुख पाठ्यक्रम का निर्माण

पाठ्यक्रम में केवल विषयवस्तु ज्ञान पर ही नहीं, बल्कि संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता एवं जीवन कौशल के विकास पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके लिए बहुआयामी एवं लचीला पाठ्यक्रम विकसित करना आवश्यक है।

7. विद्यालय वातावरण का सुदृढ़ीकरण

सकारात्मक एवं सहयोगात्मक विद्यालय वातावरण विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सृजनात्मक विकास को प्रोत्साहित करता है। अतः विद्यालयों में प्रेरणादायक वातावरण, सहयोगात्मक अधिगम तथा शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों को सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

भविष्य के शोध के लिए महत्व

प्रस्तुत अध्ययन का महत्व इस दृष्टि से है कि यह अध्ययन पीएम श्री विद्यालय एवं शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समग्र विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है, इसलिए यह अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता, विद्यालय वातावरण, शिक्षण विधियों तथा विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सृजनात्मक विकास के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगा। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों, शिक्षा प्रशासकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं एवं शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे तथा भविष्य के शोध के लिए आधार प्रदान करेंगे।

References

1. Goleman, D. (1995). Emotional intelligence. New York: Bantam Books.
2. Torrance, E. P. (1974). Torrance tests of creative thinking. Personnel Press.
3. Mehdi, B. (1989). Creativity test manual. Agra Psychological Research Cell.
4. Sharma, R. (2015). Emotional intelligence and academic achievement. Journal of Education Research, 12(3), 45–52.
5. Gupta, S. (2018). Comparative study of school students. International Journal of Education, 8(2), 23–30.
6. National Education Policy (2020). Government of India(2021) school Education Report
7. Kothari, C. R. (2009). Research methodology: Methods and techniques (2nd ed.). New Age International Publishers.
8. Rai, P. (2013). Research methodology and statistical techniques. R. Lal Book Depot.

9. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/2011
10. Shodhganga.inflibnet.ac.in
11. https://shodhganga.inflibent.ac.in